Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
UGC Approved Journal No. 63726
Impact Factor:3.021 website: www.researchguru.net
Volume-11,Issue-4,March-2018

सूरदास एवं नंददास के काव्य में शिल्प विधान

Dr.Suman Mishra "sarsij"

M.A .PhD .Hindi.

Prof. vivekanand collage of arts

Raipur drvaja – ahmedabad

प्रस्तुत लेख के अंतर्गत सूर एवं नन्द के काव्य में किस प्रकार भावों का नियोजन हुआ है, का विश्लेष्ण किया गया है | सर्व प्रथम भाव क्या है ? तथा भाव की विभिन्न दृष्टि कोण से परिभाषा प्रतुत की गयी है | इसके अतिरिक्त सूर एवं नन्द के व्यक्तिगत भावों का अनुशीलन किया गया है जो इनकी रचनाओ में मुखरित हो उठी है | अत: इसके अंतर्गत भाव के विभिन्न प्रकार की भी विशद विवेचना की गयी है |प्रेम भाव, मनोवैज्ञानिक भाव, व्यंग्य भाव, सौन्दर्य भाव इत्यादि | भावों से संबंधित रसों का भी अनुशीलन किया गया है | जिसमे रस की परिभाषा, स्वरूप, भेद आदि का स्पष्ट वर्णन किया गया है | सूरदास एवं नंददास ने अपने काव्य में किस प्रकार की भाषा का उपयोग किया है ? का वर्णन किया गया है | अगला सोपान यह है कि सूर एवं नन्द ने अपने काव्य में किस प्रकार की शैली को प्रयुक्त किया है ? इसके साथ ही साथ शैली क्या है ? का अध्ययन किया गया है |काव्य का प्रमुख पहलू छन्द को कैसे विस्मृत किया जा सकता है ? इसके स्वरूप एवं भेद का भी विशद प्रतिपादन किया गया है | काव्य का मुख्य मानदंड अलंकार की भी विशद विवेचना की गयी है |

"भाव"

भाव मानव की जन्मजात धरोहर है | जन्म लेते ही बच्चा चिंतन करने लगता है, की मै कहाँ आ गया ? महा कवि जयशंकर प्रसाद ने इसी आधार पर "कामायनी के"

प्रथम सर्ग का नाम चिंता सर्ग रखा है |जिसमे चिंतन से ही महाकाव्य का श्री गणेश हुआ है | यथा -

हिमगिर के उत्तुंग शिखर पर, बैठ शिला की शीतल छांह |

एक पुरुष भीगें नयनों से, देख रहा है प्रलय प्रवाह ||

मानव भाव प्रधान प्राणी है, इसके मन में समय -कुसमय भावों का उदय होता रहता है | समाज में वह सुखात्मक एवं दु:खात्मक अनुभूति करता है | ऐसी अवस्था में उसके मन में भाव पैदा होता है |भावाभिव्यक्ति हेतु वह भाषा का आधार लेता है | भाव विकसित होकर विचार धारा में परिणत हो जाते हैं| जिसके परिणाम स्वरूप साहित्य का सृजन होता है | साहित्य विविध भावों का भंडार है, जिसे ज्ञान का खजाना कहा जा सकता है | ये ज्ञान राशि मानव की सभ्यता एवं संस्कृति का परिचायक है | मानव मन में भावों का भंडार है जिसमे परिवेशानुसार भाव का आवागमन होता रहता है | भावाभिव्यिक्त मानव का परम उद्देश्य है जिसके लिए वह विभिन्न माध्यम या साधन अपनाता रहता है |

परिभाषा १ "-चित्त में उत्पन्न होने वाला विकार, हर्ष, शोक आदि मनोविकार जो कुछ मन में सोचा जाय राग, प्रेम भाव सूचक अंग, चेष्टा अवस्था या दशा को भाव कहते हैं |"

२ -"मन में उत्पन्न होने वाले विचार का अपरिपक्व आरम्भिक और मूल रूप जिसमे उसका आशय या उद्देश्य भी निहित होता है |मानस उद्भावना का यह रूप जो परिवर्तित, विकसित होकर विचार में परिणत होता, भाव कहलाता है |"

यदि भाव के स्वरूप की परिचर्चा करें तो मानव मन में भावों का आगमन -निर्गमन वातावरण एवं परिवेशानुसार होता रहता है | कुछ भाव मानव मन में स्थाई रूप से सदैव विद्यमान रहते है, इन्हे स्थाई भाव की संज्ञा दी गयी है जो रस के कारक हैं स्थाई भावों से विभावों की उत्पत्ति होती है जिसमे मानव मन अनुभूति करता है |

सूरदास एवं नंददास दोनों कवियों के भावों को सम्यक रूप से समझने का एक मात्र स्रोत इनकी भक्ति-भावना है| जिसकी प्रकृति में ही भाव प्रणव हृदय को संगीत और

काव्य के रूप में अभिव्यक्ति करने की स्वाभाविक शक्तिनिहित थी | सूरदास के भाव के सन्दर्भ में यही कहा जा सकता हैकी जो क्वि इतने विविध रूपों में अपने व्यक्तित्व को प्रकाशित कर सका उसका भाव जगत कितना संपन्न और क्रियाशील होगा | सूर के सन्दर्भ में यह निः संदेह कह सकते कि सूर भले ही अंधे रहे हो किन्तु उनकी आंतरिक दृष्टि खुली थी |जिस प्रतिभा शाली व्यक्क्तित्व की आन्तरिक दृष्टि खुली होती है वह न केवल आंतरिक संवेदन शील होता है अपितु जागरूक भी होता है | प्रत्येक कवि कलाकार किसी न किसी माध्यम से अपनी अनुभूतियों को वाणी देता रहा है | उदाहरण के लिए -

कालिदास ने अपनी संवेदनाओं को मेघ के सहारे, तुलसी ने चातक के सहारे, अभिव्यक्ति प्रदान की है |सूरदास तथा नंददास के हृदय में गोपियाँ बैठी रहीं अत: उन्हीं के माध्यम से उनके भ्रमर गीत एवं भंवर गीत में फूटकर नि:श्रित हुए हैं| प्रेम और रस से मिलकर आनन्द की जो धारा सूर के हृदय से निकली उसमे स्नात होकर सम्पूर्ण हिंदी जगत आज भी पावनता का अनुभव कर रहा है |

भ्रमरगीत में मानवीय भाव -

मानव हृदय विविध भावों का अक्षय श्रोतहै | प्रसंग परिस्थिति और परिवेश के आधार पर क्षण -प्रति क्षण कोई न कोई भाव मानव हृदय में प्रस्फुटित होता रहता है |जितने भी भाव मानव हृदय में प्रस्फुटित होता है उनमे सर्वश्रेष्ठ भाव प्रेम है | प्रेम की मनोवृति जब जागृत हो जाती है तब एक कोने से दुसरे कोने तक सरसता का अनुभव करने लगता है |इसके अतिरिक्त अन्य अनेक भावों की व्यंजना सूर ने अपने काव्य में किया है -यथा मनोवैज्ञानिक भाव, व्यंग्य भाव, कुपित भाव, सरल भाव, आदि|

भंवर गीत का भाव नियोजन -

नंददास कोरे तार्किक पंडित या दार्शनिक आचार्य ही नहींबल्कि वे एक रस सिद्ध कवि भी गोपियों की विरह व्यथा और उनके उपलम्भों का गुम्फन किया है | अत: सारांशत; कहा जा सकता है कि सूर एवं नन्द के काव्य में अनेकानेक भावों का गुम्फन अत्तयंत मर्म स्पर्शी दंग से हुआ है |अपितु सूर की भाव प्रवणता नन्द की अपेक्षा अधिक विस्तृत है, यद्दपि एक ही भाव व्यक्त करते है किन्तु जो भाव नंददास

संक्षेप्त:दो पंक्तियों में कह सकते है, वही बात सूरदास को कहने में पृष्ठों की आवश्यता होती है |

सूरदास एवं के काव्य की भाषा -

भाषा विचारो के अभिव्यक्ति का माध्यम है -अर्थात language is medium of expression, -भाषा विचार अभिव्यक्ति का साधन है, भाषा पैत्रिक नहीं अर्जित साधन है, जन्म जात बच्चे की कोई भाषा नहीं होती वह अपने वातावरण विशेषकर भूमि से ग्रहण करता है जिसे मात्री भाषा कहते हैं | भाषा द्वारा मनुष्य एक दुसरे से विचार विनमय करता है |

भाषा के स्वरूप के संदर्भ में कह सकते हैं कि यह सतत परिवर्तित होती रहती है | भाषा का प्रारम्भिक स्वरूप स्थाई नही होता है, स्वरूप के पश्चात इसके भेद के संदर्भ में कहा जाता है -व्यक्तिगत बोली, उपबोली, बोली, भाषा, मानक, भाषा, राष्ट्र भाषा, राजभाषा, अंतराष्टीय भाषा, -ये सभी भाषा के भेद हैं |इसके अतिरिक्त और भी अन्य प्रकार की भाषाएँ हैं जैसे-मोबाइल की भाषा, कम्पूटर की भाषा, इंटरनेट की भाषा, ज्योतिष की भाषा आदि |सूरदास ब्रज भाषा के प्रथम कवि हैं नंददास भी अपने साहित्य में ब्रज भाषा का उपयोग किया है | सूर एवं नन्द की भाषा की तुलना के निष्कर्ष में विजयेन्द्र स्नातक का कहना है कि "सूरदास की भाषा में ब्रज भाषा का आंचलिक पुट है |लोग भाषा के अधिक समीप होने के कारण मसृण और परिष्कृत शब्दों की और उनका झुकाव नहीं है |अत: दोनों कवियों की भाषा अतिशय परिष्कृत एवं परिमार्जित है साथ ही साथ साम्यता तथा विषमता से युक्त है |

सूरदास एवं नंददास के भ्रमरगीत तथा भंवरगीत की शैली -

शैली का अभिप्राय ढंग या तरीका होता है जिसमे विशिष्ट परिपाटी का अनुकरण किया जाता है | "style is the man" – किसी की शैली से ही उसकी पहचान होती है, इसी लिए कहा गया है की "खत को मजनू भांप लेते हैं लिफाफा देख कर"| सूरदास एवं नंददास की शैली का अनुशीलन करने पर स्पष्ट होता है कि सूरदास की शैली का क्षेत्र नंददास की अपेक्षा विशद है |सूरदास की शैली किसी बात को सीधे कहने में

सक्षम है जबकि नन्दास की शैली में इतनी स्पष्टता नही है, सूर की शैली व्यास प्रधान है जबकि नन्द की शैली समास प्रधान है |

सूरदास एवं नंददास के भ्रमरगीत तथा भंवरगीत में प्रयुक्त छन्द-

सूरदास का काव्य छन्द योजना की दृष्टि से उत्मोत्म है जबकी नन्दास के काव्यों में संगीतात्मकता विद्यमान है सूरदास के अधिकतम पद गाने वाले हैं अत: सूरदास निश्चय ही एक गाने वाले भक्त थे |उनके जीवन वृत्त और पदों की संगीत्म्कता से भी यह सिद्ध हो जाता कि सूरदास साधारण गायक नही थे, वे संगीत शास्त्र के पूर्ण ज्ञाता थे | यदि सूरदास एवं नन्दास के छन्द विधान की तुलना करें तो स्पष्ट हो जाता है कि सूरदास के पदों में टेक पहले लगाया गया है जबकि नन्दास के पदों में टेक बाद में लगाया गया है | किन्तु यह अवश्य है कि दोनों कवियों ने टेक अपने अपने पदों में लगाया है | सूरदास के पद जिस किसी छन्द में हैं वे सगीतात्म्कता समेटे हुए हैं | जबकि नन्दास प्रकांड संगीतज्ञ होते हुए भी इनके भँवर गीत के पदों में सगीत्मकता नही है | यद्दपि सूरदास के अधिकांश पद गेय हैं जबकि नन्दास का ऐसा नहीं है |

सूरदास एवं नन्दास के काव्य में अलंकार नियोजन -

“काव्य शोभा करान धर्मान अलंकारान प्रचछते” | काव्य की शोभा बढ़ाने वाले कारण ही अलंकार होते हैं |

सुमित्रानंदन पन्त पल्लव की भूमिका में अलंकार के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए लिखते है कि अलंकार केवल वाणी की सजावट के लिए नहीं हैं बल्कि वे भाव की अभिव्यक्ति के विशेष द्वार हैं | अलंकार भेदोपभेद की दृष्टि से बहुत ही विशद सूरदास एवं नन्दास का अलंकार विधान बहुत ही प्रभाव शाली है | सूरदास का वाग्वैविध्य सहृदयता से समन्वित है यही कारण है कि उनके काव्य में अलंकारों के घटाटोप के दर्शन नही होते उन्होंने अलंकारों का प्रयोग विशेष कर सौन्दर्यबोध के लिए ही किया है | नन्दास के अलंकार योजना में अनेक शैलियों का मिश्रित रूप है उपमानों की दृष्टि से इनके काव्य में कई स्थलों पर नवीनता के दर्शन होते हैं -

“सुनत सखा के बैन नैन भरि आये दोउ ||”

संक्षेपत: कहा जा सकता है कि सूरदास एवं नन्दास ने प्रकृत के उपमानों को देखते हुए उसमे तुलना करके एक विशेष आकर्षण ला दिए है|

संदर्भ ग्रन्थ -

१ -जय शंकर प्रसाद ,कामायनी -चिंता सर्ग से |

२ -राम चन्द्र वर्मा , मानक हिंदी कोष |

३- कलिका प्रसाद ,वृहद हिंदी कोष |

४ -वामन शिव राम आप्टे ,संस्कृत हिंदी कोष |

५ -डॉ सत्य व्रत सिंह ,काव्य प्रकाश |

६ -आचार्य विश्व नाथ ,साहित्य दर्पण |

७ -भरत मुनि ,नाट्य शास्त्र |

८ -धनंजय ,दसरूपक |

९-आचार्य रामचंद्र शुक्ल , भ्रमरगीत सार |

१० -डॉ हरिचरण शर्मा ,भ्रमर गीत सार |